☆ पंचमोध्याय: ☆

समीक्षा एवं अरिष्ट निवारक उपाय

क. सर्वेक्षण में प्राप्त घटित ग्रहयोग

ख. सर्वेक्षण में प्राप्त नूतन ग्रहयोग

ग. प्रायोगिक अध्ययन में प्राप्त ग्रहयोगों की समीक्षा

घ. बालारिष्टभंग निवारक शास्त्रीय उपाय

5.1. सर्वेक्षण में प्राप्त प्रमुख घटित योग–

पूर्व अध्यायों में बालारिष्ट योगों एवं जन्मांगों में उपस्थित योगों को विस्तार से विवेचन प्रदान किया गया, अतः घटित योगों की समीक्षा को पुनः सारणी रुप में प्रस्तुत किया जा रहा है–

प्राप्त प्रमुख घटित योगों की सारणी

कम	योग का विवरण	ग्रह/भाव स्थिति	मृत्यु/रोग संकेत	प्रभाव की आयु सीमा	स्रोत ग्रन्थ	घटित जन्मांग संख्या
1	पाप ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा का योग	चन्द्रमा लग्न से षष्ठ, अष्टम, द्वादश में अनेक पापग्रहों से दृष्ट हो	तत्काल मरण	जन्मकाल में	बृहत्पराशर होरा शास्त्र	2, 8, 11, 19, 28, 29, 39, 40, 47, 50, 54, 58, 60, 64, 69, 77
2	पापग्रहों से दृष्ट मंगल का योग	मंगल जन्मलग्न या अष्टम भाव में पापग्रहों से दृष्ट या युत हो व शुभ ग्रहों से दृष्ट या युत न हो	मृत्युप्रद	जन्मकाल में	बृहत्पराशर होरा शास्त्र	33, 44, 45, 49, 55, 59, 63, 65
3	सूर्य या शनि का योग	सूर्य या शनि लग्न या अष्टम में हों	मृत्युप्रद	जन्मकाल में	आयुनिर्णय	4, 5, 6, 8, 9, 16, 17, 18, 22, 23, 27, 31, 33, 36, 41, 42, 43, 44, 45, 59, 61, 64, 71
4	शनि, चन्द्रमा और बृहस्पति का योग	लग्न में शनि, अष्टम में चन्द्रमा व तृतीय में बृहस्पति हो	सद्य मृत्युदायक	जन्मकाल में	पंचस्वरा	23, 53,

5	पापयुक्त चन्द्रमा का योग	चन्द्रमा लग्न, सप्तम, नवम में पापग्रह से युक्त हो व शुभग्रहों से दृष्ट या युत न हो	शिशु के लिए मृत्युदायक	जन्मकाल में	बृहत्पराशर होरा शास्त्र	6, 17, 25, 32, 33, 35, 49, 50, 56, 72 76,
6	गण्डान्त, चन्द्रमा और पापग्रहों का योग	गण्डान्त (कर्क, वृश्चिक, मीन) लग्नों के अन्तिम नवांश में जन्म हो, चन्द्रमा केन्द्र में हो व चारों केन्द्रों में पाग्रह हों	शीघ्र प्राणघातक	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्, फलित मार्तण्ड	5, 49,
7	कीट लग्न का योग (वज्रमुष्टि)	कर्क, वृश्चिक लग्न में जन्म हो, चक्र के पूर्वार्द्ध में सभी पापग्रह व परार्द्ध में शुभग्रह हों	परम अरिष्ट	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्, फलित मार्तण्ड, सारावली	25, 35, 36, 52, 72, 78,
8	पापकर्तरी योग लग्न व सप्तम भाव	लग्न व सप्तम भाव पापकर्तरी योग में हों	निश्चय मृत्युकारक	जन्मकाल में	बृहत्पराशर होरा शास्त्र, बृहज्जातकम्	26
9	क्षीण चन्द्रमा का योग	क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो और सूर्य, मंगल, शनि केन्द्र व अष्टम भावों में हों	सद्योऽरिष्ट	जन्मकाल में	बृहत्पराशर होरा शास्त्र, सारावली	48, 49, 56, 72
10	पापकर्तरी में चन्द्रमा का योग	चन्द्रमा लग्न, सप्तम, अष्टम, द्वादश में पापकर्तरी योग में हो	सद्योऽरिष्ट	जन्मकाल में	बृहत्पराशर होरा शास्त्र, श्री नारदीय जातकम्	18, 24

11	पापग्रहों का अष्टम, नवम, द्वादश में योग	अष्टम, नवम, द्वादश भावों में सूर्य, मंगल, शनि शुभग्रहों की दृष्टि या युति से रहित होकर स्थित हों	अरिष्टप्रद	प्रसवकाल में	बृहत्पराशर होरा शास्त्र	12, 33, 41
12	द्रेष्काण व क्षीण चन्द्रमा का योग	जन्मकुण्डली व द्रेष्काण कुण्डली के सप्तम भाव में पाप ग्रह हों और लग्न में क्षीण चन्द्रमा हो	शीघ्र अरिष्ट प्रदायक	जन्मकाल में	बृहत्पराशर होरा शास्त्र, सारावली	25, 56, 72
13	लग्न में मंगल और षष्ठ/अष्टम में शनि	शुभग्रहों से अदृष्ट मंगल लग्न में हो व षष्ठ, अष्टम में शनि स्थित हो	तुरन्त मृत्यु	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्, ज्योतिषतत्वप्रकाश	33, 44, 59
14	पापयुक्त चन्द्रमा का योग	पापग्रह से युक्त व शुभग्रह से अदृष्ट चन्द्रमा लग्न, सप्तम, अष्टम, द्वादश में स्थित हो और केन्द्र में शुभग्रह न हों	अविलम्ब मृत्यु	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्	8, 17, 28, 29, 36, 49, 51, 56, 72, 77,
15	क्षीण चन्द्रमा का योग	क्षीण चन्द्रमा द्वादश में हो कई पापग्रह लग्न व अष्टम में हों तथा केन्द्र में शुभग्रह न हों	तत्काल मृत्यु	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्, जातकपारिजात,	मेरे द्वारा शोध में संगृहीत जन्मांगों में यह योग पूर्णरुप से यथावत् प्राप्त नहीं हुआ, आंशिक रुप से कुण्डली संख्या 69 में प्राप्त हुआ।

16	राशि के अंतिम नवांश में चन्द्रमा	शुभग्रह से अदृष्ट चन्द्रमा राशि के अन्तिम नवांश में हो व त्रिकोण भवनों में मिश्रित/पापग्रह स्थित हों।	अविलम्ब मृत्यु	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्	34, 61, 74
17	लग्नस्थ सूर्य–चन्द्रमा और पापग्रह	सूर्य व चन्द्रमा लग्नस्थ हों व पंचम, अष्टम, नवम में पापग्रह हों तथा लग्न बलवान शुभग्रहों से दृष्ट न हो।	शीघ्र मरण	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्	मेरे द्वारा किये गये शोध में संगृहीत जन्मांगों में यह योग पूर्णरुप से यथावत् प्राप्त नहीं हुआ।
18	शनि, सूर्य, चन्द्रमा और मंगल का योग	द्वादश में शनि, नवम में सूर्य, लग्न में चन्द्रमा, अष्टम में मंगल स्थित हों तथा बलवान बृहस्पति से दृष्ट न हों	शीघ्र मरण	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्, जातकपारिजात	मेरे द्वारा किये गये शोध में संगृहीत जन्मांगों में यह योग पूर्णरुप से प्राप्त नहीं हुआ, आंशिक रुप से कुण्डली संख्या 01 में प्राप्त हुआ।
19	पापग्रहों से युक्त चन्द्रमा	लग्न, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, द्वादश में पापग्रह से युक्त चन्द्रमा हो, जो शुभग्रह से दृष्ट या युत न हो	सद्य मरण	जन्मकाल में	बृहज्जातकम्, जातकपारिजात	6, 18, 25, 28, 29, 32, 33, 36, 49, 51, 54, 56, 72, 77

20	अष्टम भाव में पापग्रह	अष्टम भाव में वृष या तुला राशि में पापग्रह से दृष्ट पापग्रह स्थित हो	प्राणों पर संकट	जन्मकाल में	सारावली	5, 27, 40
21	प्रबल राजयोग में जन्म	प्रबल राजयोगों में जन्म लेने वाले सामान्यकुलोत्पन्न बालक	अरिष्ट	जन्मकाल में	सारावली, सर्वार्थचिन्तामणि	2, 3, 5, 11, 12, 14, 18
22	दशम भाव में सूर्य	मेष, वृश्चिक, मकर, कुम्भ राशियों में सूर्य दशम स्थान में स्थित हो और बलवान पापग्रह से दृष्ट हो	तत्काल अरिष्ट	जन्मकाल में	सारावली, फलितमार्तण्ड	72
23	केन्द्र/त्रिकोण में पापग्रह	समस्त पापग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हों और षष्ठ, अष्टम, द्वादश में शुभग्रह हों, सूर्योदय के समय जन्म हो	तत्काल प्राणसंकट	जन्मकाल में	सारावली	मेरे द्वारा किये गये शोध में संगृहीत जन्मांगों में यह योग पूर्णरुप से यथावत् प्राप्त नहीं हुआ, आंशिक रुप से कुण्डली संख्या 16, 22, 35, 81 में प्राप्त हुआ।

24	पापदृष्ट क्षीण चन्द्रमा का योग	मेष, वृष या कर्क के अतिरिक्त अन्य राशियों में क्षीण चन्द्रमा पाप दृष्ट होकर लग्न में हो	शीघ्र मृत्युप्रद	जन्मकाल में	सारावली, जातक सारदीप	36
25	पापग्रहों से युक्त चन्द्रमा	लग्न, षष्ठ, अष्टम, द्वादश में चन्द्रमा पापग्रहों से युक्त हो, शुभग्रहों से दृष्ट न हो और केन्द्र में शुभग्रह न हों	शीघ्र मृत्यु	जन्मकाल में	सारावली, जातकपारिजात	43, 47, 49
26	सूर्य, शनि, मंगल, चन्द्रमा का योग	सप्तम में सूर्य व लग्न में शनि या मंगल से युक्त चन्द्रमा हो, और पाप दृष्ट हो	शीघ्र मृत्यु	जन्मकाल में	सारावली, आयुनिर्णय	49
27	केन्द्र में चन्द्रमा और अष्टम में पापग्रह	केन्द्र भावों में चन्द्रमा हो, अष्टम में पापग्रह हो और गुरु केन्द्र के अतिरिक्त अन्य स्थानों में हो	शीघ्र अरिष्ट	जन्मकाल में	सारावली	43, 49
28	लग्नेश और शनि का नीच राशि में योग	लग्नेश नीच राशि/अष्टम में हो, और शनि भी इसी स्थिति में हो अथवा सप्तम में हो।	मृतप्राय या गर्भ से ही मृत	जन्मकाल में	जातकपारिजात, फलितमार्तण्ड	18
29	पापग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा	चन्द्रमा शुभ ग्रहों से अदृष्ट हो, क्रूर ग्रह के साथ हो, और लग्न व सप्तम में एक–एक पाप ग्रह हो	शीघ्र मृत्यु	जन्मकाल में	जातकपारिजात	6, 18, 49

30	चन्द्रमा से सप्तम में सूर्य और मंगल	चन्द्रमा से सप्तम में सूर्य व मंगल हो	अरिष्ट	एक सप्ताह के अन्दर	सारावली, आयुनिर्णय	49
31	लग्न और अष्टम में पापग्रह	लग्न में मंगल और अष्टम में सूर्य और शनि हों	बालक की मृत्यु	तीन दिन में	सारावली	33, 49
32	मंगल, गुरु, शनि और चन्द्रमा का योग	मंगल, गुरु, शनि और चन्द्रमा एक ही राशि में स्थित हों।	अरिष्ट	पाँच वर्ष	सारावली, जातकपारिजात, जातकसारदीप, सर्वार्थचिन्तामणि	81
33	सूर्य, शनि, मंगल, चन्द्रमा का योग	सूर्य, शनि, मंगल, चन्द्रमा एक ही राशि में स्थित हों	अरिष्ट	पाँच वर्ष	सारावली, जातकपारिजात, जातकसारदीप, सर्वार्थचिन्तामणि	03, 81
34	दृश्यार्द्ध, अदृश्यार्द्ध में और लग्न में राहु का योग	शुभग्रह दृश्यार्द्ध में और पापग्रह अदृश्यार्द्ध में हों, और लग्न में राहु हो	मृत्युप्रदायक	पाँच वर्ष	जातकसारदीप, सर्वार्थचिन्तामणि	09, 32
35	लग्नेश और शनि का योग (8 वर्ष तक)	लग्नेश लग्न में कूरग्रहयुत शनि से दृष्ट हो, यदि पापग्रहों के साथ गुरु हो तो अरिष्ट नहीं होता	अरिष्ट	आठ वर्ष	सर्वार्थचिन्तामणि	49, 53

36	सूर्य–चन्द्रमा के साथ शनि का योग	शनि के साथ सूर्य व चन्द्रमा की युति हो	अरिष्ट	नवम वर्ष में	सारावली	03
37	लग्नाधिपति का योग	लग्नाधिपति पाप ग्रह की राशि में हो और उस पर शुभग्रहों की दृष्टि न हो	अरिष्ट	नवम वर्ष में	मानसागरी	11, 24, 29, 30, 31, 40, 42, 48, 57
38	गण्डान्त में जन्म का फल (दिन, रात्रि, संध्या)	गण्डान्तों में यदि दिन के समय जन्म हो, रात्रि के समय जन्म हो, या संध्याकाल में जन्म हो	दिन में जन्म होने पर एक वर्ष में पिता को, रात्रि में जन्म होने पर तीन वर्ष में माता को, व संध्याकाल में जन्म होने पर जातक को स्वयं को अरिष्ट होता है	एक वर्ष/ तीन वर्ष	श्री नारदीय जातकम्	39
39	नीचस्थ बुध, गुरु या शुक्र का राहु से युक्त होना	बुध, बृहस्पति, शुक्र में से कोई ग्रह नीचस्थ होकर राहु युक्त हो व उस पर चन्द्रमा की दृष्टि न हो	जातक अधिक जीवित नहीं रहता,	–	मानसागरी	35, 53,
40	पाप ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा का योग	सप्तम अथवा अष्टम भाव में पाप ग्रह स्थित हों तथा उनपर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक की माता सहित मृत्यु हो जाती है, शुभदृष्टि होने पर भी रोग अवश्य होता है	(माता सहित अरिष्ट) मृत्यु या रोग	–	श्रीनारदीय जातकम्, सारावली, आयुनिर्णय	50, 82

41	सूर्य, शनि, चन्द्रमा, मंगल का योग	सूर्य, शनि, चन्द्रमा, मंगल, ये सभी ग्रह लग्न से पंचम स्थान में स्थित हों।	माता व सहोदर भाई के लिए मृत्युप्रद	–	बृहत्पराशर होरा शास्त्र	72
42	द्वितीय भाव में राहु, बुध, शुक्र, शनि, सूर्य का योग	द्वितीय भाव में राहु, बुध, शुक्र, शनि व सूर्य एक साथ स्थित हों	जन्म से पूर्व पिता की मृत्यु व जन्म के पश्चात माता की भी मृत्यु	–	बृहत्पराशर होरा शास्त्र, मानसागरी	21
43	पापग्रह से युत चन्द्रमा का योग (मातृघातक)	बलवान पापग्रह से दृष्ट चन्द्रमा पापग्रहयुत हो अथवा चन्द्रमा पापग्रहयुत हो व उससे षष्ठ, सप्तम में पापग्रह हों	जातक की माता को अरिष्ट होता है	–	बृहत्पराशर होरा शास्त्र	82
44	षष्ठ–द्वादश और चतुर्थ–दशम में पापग्रहों का योग	षष्ठ व द्वादश में एकसाथ पापग्रह हों तो माता के लिए, व चतुर्थ–दशम में पापग्रह स्थित हों तो पिता के लिए अरिष्टकारक होते हैं	माता व पिता के लिए अरिष्ट	–	बृहत्पराशर होरा शास्त्र	50
45	लग्न में बृहस्पति, द्वितीय में शनि, तृतीय में राहु का योग	जन्मलग्न में बृहस्पति, द्वितीय भाव में शनि व तृतीय भाव में राहु हो	माता को मृत्यु प्रदान करते हैं	–	बृहत्पराशर होरा शास्त्र	आंशिक रूप से 82 में

46	नीचस्थ सूर्य शनि, मंगल का राहु–केतु से युक्त होना	सूर्य, शनि, मंगल में से कोई ग्रह नीचस्थ हो व राहु–केतु से युक्त हो	जातक मातृघातक होता है	–	मानसागरी	आंशिक रूप से 50 में
47	सप्तम या अष्टम में पापग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा	लग्न से सप्तम या अष्टम भावों में अनेक पापग्रह स्थित होकर यदि चन्द्रमा को देखें। यदि शुभग्रहों की दृष्टि हो तो दोनों के लिए रोगकारक होता है	माता सहित पुत्र को अरिष्ट, रोगकारक (शुभ दृष्टि होने पर)	–	जातक सारदीप	50
48	पापयुक्त चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि	पापयुक्त चन्द्रमा पर मंगल की दृष्टि हो	माता को प्रसव में विशेष कष्ट होता है	–	जातक सारदीप	72

5.2. सर्वेक्षण में प्राप्त नवीन योग–

ज्योतिष की सनातन परंपरा में बालारिष्ट योगों का विश्लेषण अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है, क्योंकि ये योग शिशु के प्रारंभिक जीवन में आने वाली संभावित बाधाओं एवं स्वास्थ्य चुनौतियों के सूचक होते हैं। शोध कार्य के दौरान जन्मकुण्डलियों में कुछ ऐसी ग्रह स्थितियां प्राप्त हुई हैं जिनसे बालारिष्ट सम्भावित हैं। उन्हीं सर्वेक्षण प्राप्त नवीन बालारिष्ट योगों को निष्कर्ष के रुप में सारणी में प्रस्तुत किया गया है। सारणी में नवीन ग्रहीय संयोगों का विवरण जिन जन्मांगों में प्राप्त हुए उनकी संख्या एवं अशुभता की समाप्ति के लिए सम्भावित शास्त्रीय उपायों को भी सम्मिलित किया गया है। यद्यपि इन योगों को अधिकारिक रुप से मान्यता नहीं है, किन्तु भविष्य में और अधिक जन्मांगों पर अध्ययन करने के पश्चात इन योगों की पूर्ण पुष्टि की जा सकती है। उन प्राप्त नवीन योगों की सारणी प्रस्तुत की जा रही है–

नवीन बालारिष्ट योगों की सारणी

क्र0 सं0	योग	योग विवरण	घटित जन्मांग संख्या	सभावित शास्त्रीय
01.	लग्नेशों की अशुभता	जन्म/नवांश में लग्नेशों अष्टमेश से सम्बन्ध	05, 26	सम्बन्धित ग्रहों के जप
02.	जन्मलग्नेश अशुभता	जन्मलग्नेश षष्ठ, अष्टम, द्वादश में पापयुक्त या दृष्ट हो	02, 07, 13	जन्मलग्नेश के मन्त्रों के जप
03.	जन्मलग्न अशुभता	लग्न पर नीच ग्रह की दृष्टि अथवा स्थिति हो	07, 09 24, 33	सूर्य के जप व लग्नेश का रत्न धारण
04.	नवांशेश अशुभता	नवांश लग्नेश षष्ठ, अष्टम, द्वादश में पापदृष्ट या युत अथवा पाप मध्य हो	01, 07, 17, 26, 41	सम्बन्धित ग्रहों के जप
05.	द्रेष्काणेश अशुभता	द्रेष्काण लग्नेश पर पाप प्रभाव हो अथवा द्रेष्काण लग्नेश षष्ठ, अष्टम, द्वादश में पापयुक्त हो	01, 07, 42, 46	सम्बन्धित ग्रह के जप
06.	शुक्र अशुभता	जन्मकुण्डली/नवांश/द्रेष्काण के षष्ठ, अष्टम, द्वादश में शुक्र पापयुक्त या दृष्ट हो	01, 06, 08, 10, 13, 17, 25, 31, 33, 38, 45, 47, 49, 78	शुक्र व सम्बन्धित पापग्रह शान्ति/महामृत्युंजय जप
07.	षष्ठेश सप्तमेश सम्बन्ध	षष्ठेश व सप्तमेश का परस्पर सम्बन्ध हो	01, 06	सम्बन्धित ग्रहों के दान
08.	नवांश/द्रेष्काण लग्न सप्तम की अशुभता	नवांश/द्रेष्काण के लग्न व सप्तम में पाप ग्रह हों	02, 07, 09, 13, 16, 17, 24, 25, 30, 31, 36, 37, 38	सम्बन्धित ग्रहों के दान व जप
09.	मारकेशों की युति	जन्म/नवांश/द्रेष्काण अथवा त्रिंशाश कुण्डली में उसी के मारकेशों की युति हो	02, 25, 36	महामृत्युंजय जप/दुर्गासप्तशती पाठ
10.	जन्म/नवांश लग्नेश अशुभता	जन्म/नवांश लग्नेश पर पापग्रहों की दृष्टि या युति हो	08, 10, 13, 43, 47, 48	लग्नेश रत्न धारण/रुद्राभिषेक/सम्बन्धित पाप ग्रहों के जप
11.	नवांश/द्रेष्काण लग्न पर नीच प्रभाव	नवांश/द्रेष्काण लग्न पर नीच ग्रह की दृष्टि या स्थिति हो	24, 78	रुद्राभिषेक

12.	सूर्य, चन्द्र शनि की अशुभता	जन्मलग्न/नवांश में सूर्य, चन्द्र, शनि एक साथ षष्ठ, अष्टम, द्वादश भावों में स्थित हों	22	महामृत्युंजय/दर्शशान्ति विधान/शनि के जप
13.	जन्म लग्न, लग्नेश अशुभता	जन्म लग्न व लग्नेश किसी भी प्रकार से पाप प्रभाव में हों	16, 17, 30, 37, 41, 47, 49	महामृत्युंजय/सम्बन्धित ग्रहों के दान
14.	चतुर्थेश पंचमेश अशुभता	जन्मलग्न में चतुर्थेश व पंचमेश पापयुक्त होकर षष्ठ, अष्टम, द्वादश भाव में स्थित हों	34	सम्बन्धित ग्रहों के जप
15.	गुरु, शुक्र की अशुभता	गुरु व शुक्र राहु युत हों	16, 35	दुर्गा पाठ/राहु शान्ति
16.	नवांश में चन्द्र अशुभता	नवांश कुण्डली में चन्द्रमा लग्न, षष्ठ, अष्टम, द्वादश में पायुक्त या दृष्ट हो	16, 35	महामृत्युंजय/सम्बन्धित पापग्र की शान्ति
17.	गुरु, शुक्र का मारक व मारकेशों से सम्बन्ध	जन्मलग्न अथवा नवांश में पापयुत या दृष्ट गुरु, शुक्र का मारकस्थानों अथवा मारकेशों से सम्बन्ध हो अथवा स्वयं मारकेश हों	31, 36	महामृत्युंजय/अमृत संजीवनी/दुर्गापाठ व सम्बन्धित पापग्र की शान्ति
18.	जन्मलग्न/नवांश में लग्नेश मारकेश सम्बन्ध	जन्म लग्न अथवा नवांश में उसी के लग्नेशों का यदि मारकेशों से सम्बन्ध हो	36, 38, 41, 79	महामृत्युंजय/अमृत संजीवनी/दुर्गापाठ व सम्बन्धित पापग्र की शान्ति
19.	मारकेशों का अष्टमेश से सम्बन्ध	जन्म/नवांश कुण्डली में मारकेशों का अष्टमेशों से सम्बन्ध हो	42, 43	महामृत्युंजय/रुद्राभिषेक/सम्बन्धित ग्रहों के दान

5.3. सर्वेक्षण में प्राप्त ग्रह योगों की समीक्षा–

मेरे द्वारा किये गये इस शोध का प्राथमिक लक्ष्य जन्म कुंडली के माध्यम से शिशु के भावी जीवन की रूपरेखा को अधिक स्पष्टता और सटीकता के साथ समझने का मार्ग प्रशस्त करना है। सर्वेक्षण के दौरान कुछ योग जन्मांगों पर पूर्ण रुप से घटित हुए तथा कुछ योग आंशिक रुप से घटित होते हुए पाये गये हैं, एवं कुछ योग जैसे कि जन्मकालिक वातावरणीय स्थितियां व भौमान्तरिक्ष उत्पात आदि। जिनसे बालारिष्ट के सन्दर्भ विवरण अप्राप्त होने के कारण

उनके फलाफल के विषय में स्पष्ट रुप से सर्वेक्षण नहीं हो पाया। ज्योतिष ग्रन्थों में वर्णित प्राचीन व नवीन प्राप्त बालारिष्ट योगों का विश्लेषण व तत्सम्बन्धित सारणियां अभिभावकों और ज्योतिष विद्वानों दोनों के लिए एक प्रामाणिक दिशानिर्देश के रूप में कार्य करेंगी, ताकि समय रहते ही शास्त्रों में वर्णित आवश्यक मंगलमय उपायों द्वारा बच्चे के जीवन को सुखमय और निरोगी बनाया जा सके। मेरे द्वारा किया गया यह शोध कार्य ज्योतिष जगत में एक नया मानदंड स्थापित करने का प्रयास है।

5.4. बालारिष्ट भंग निवारक शास्त्रीय उपाय–

शास्त्रकारों बालारिष्ट योगों का फल मृत्यु बताया है किन्तु सर्वेक्षण के दौरान अनेक ऐसे जन्मांग भी प्राप्त हुए हैं जिनमें प्रबल बालारिष्ट योग थे किन्तु वे जातक सुरक्षित रहे और स्वस्थ जीवन भी व्यतीत कर रहे हैं। उन जातकों के जीवन रक्षा के हेतु उन जातकों के माता–पिता द्वारा किये गये शास्त्रीय उपाय थे। अतः शास्त्रों में प्रस्तुत किये गये अरिष्ट निवारक उपायों के माध्यम से जातकों के जीवन का रक्षण किया जा सकता है यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इसी आशय से आगे संक्षेप रुप में बालारिष्ट योगों के दुष्फलों के निवारणार्थ शास्त्रीय उपायों को प्रस्तुत किया जा रहा है–

1. नवग्रहों की शान्ति हेतु विधान

सूर्यादि ग्रहों की अरिष्टकारी स्थितियों का निश्चयीकरण किये जाने के पश्चात् सम्बन्धित ग्रह के अरिष्ट निवारण हेतु उस ग्रह के मन्त्र का निर्धारित संख्या में जप, दशांश हो, दशांश तर्पण–मार्जन व दशांश ब्राह्मण भोज करने का शास्त्रीय विधान है।

महर्षि पराशर जी का कथन है कि अरिष्टकारक ग्रह की मूर्ति की स्थापना करके उस ग्रह से सम्बन्धित सामग्री से उसका पूजन कर, निर्धारित संख्या में उसके मन्त्रों का जप करने के पश्चात वेदोक्त विधियों से ग्रह से सम्बन्धित पदार्थ एवं समिधाओं से हवन करने के पश्चात् ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का दान भी करना चाहिए।[1]

---

[1] बृहत्पराशर होराशास्त्र, ग्रहशान्तिविवेकाध्याय, पृ0 सं0 880 से 884

महर्षि कहते हैं कि ग्रहों को ब्रह्मा जी द्वारा वरदान प्राप्त है कि जो मनुष्य इनको पूजेगा ये उसे पूजित एवं सम्मानित बनाएंगे। मनुष्य की उन्नति–अवनति, लाभ–हानि, शुभ–अशुभ सभी कुछ ग्रहों के अधी है, अतः प्रत्येक मनुष्य को ग्रहों की पूजा अवश्य करनी चाहिए।[2] महर्षि पराशर जी द्वारा लिखित विधि का विस्तार से निम्न तालिका में विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है–

महर्षि पराशर के अनुसार ग्रहों की मूर्ति स्वरुप पूजन विधि, मन्त्र जप संख्या, पूजन–हवन–दान वस्तु विवरण तालिका

क0 सं0	ग्रह	मूर्ति धातु	मूर्तिस्वरुप	जप संख्या	समिधा	भक्ष्य पदार्थ	दान वस्तु
01.	सूर्य	तांबा	कमलासन में स्थित, कमल के समान कान्ति, सात घोडों के रथ पर, दो हाथों वाला व हाथ में कमल पुष्प	7000	ऑक	गुड़–भात	गोदान
02.	चन्द्रमा	स्फटिक पत्थर	श्वेत वर्ण, श्वेत वस्त्र, दस घोड़ों के रथ पर आरुढ़, सफेद आभूषण, गदा धारण किये हुए, दो हाथ वाला	11000	ढॉक	खीर	शंखदान
03.	मंगल	लाल चन्दन	लाल माला, लाल वस्त्र, हाथ में भाला,	10000	खैर	श्यामाक	वृषभदान

[2] बृहत्पराशर होराशास्त्र, ग्रहशान्तिविवेकाध्याय, श्लोक सं0 24/25, पृ0 सं0 884

			शूल–गदा धारण किये हुए, चार हाथों वाला, मेष पर सवार, दाहिने हाथ से वरद मुद्रा वाला				
04.	बुध	सोना	पीली माला–वस्त्र, कनेर समान रंगत, हाथों में ढ़ाल, तलवार, गदा वरद मुद्रा, सिंह पर आरुढ़	9000	अपामार्ग	दूध, चावल	स्वर्णदान
05.	गुरु	सोना	पीतवर्ण, चतुर्भुज, हाथों में दण्ड, वरद मुद्रा, जपमाला, अक्षमाला, कमण्डलु धारण किये हुए	19000	पीपल	दही चावल	वस्त्रदान
06.	शुक्र	चाँदी	श्वेतवर्ण, चतुर्भुज, हाथों में दण्ड, वरद मुद्रा, जपमाला, अक्षमाला, कमण्डलु धारण किये हुए	16000	गूलर	सुपाच्य अन्न	घोड़ादान
07.	शनि	लोहा	नीलम रंगत, हाथों में शूल, वरदमुद्रा, धनुष–बाण व गिद्ध पर आरुढ़	23000	शमी	उड़द या तिल मिश्रित चावल	काली गाय दान
08.	राहु	सीसा	भयानक मुख, हाथ में चमड़े की ढ़ाल व तलवार, शेर पर	18000	दूर्वा	अनेक प्रकार के	लोहे की वस्तु दान

			सवार, काला–नीला वर्ण			मिश्रित अनाज	
09.	केतु	काँसा	धुँए के समान रंगत, दो हाथों वाला, विकृत मुखाकृति, हाथ में गदा, गिद्ध की सवारी	17000	कुशा	अनेक प्रकार के मिश्रित अनाज	बकरा या मेष दान

शास्त्रों में वर्णित नवग्रहों के जप हेतु विभिन्न मन्त्र–

वैदिक मन्त्र

सूर्य– ऊँ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्येन सविता रक्षेन देवो याति भुवनानि पश्यन्।

चन्द्रमा– ऊँ इमं देवा असपत्न ँ्सुवध्वं महते क्षत्राय, महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रिस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा, सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ् राजा।

मंगल– ऊँ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ँ् रेता ँ् सि जिन्वति।।

बुध– ऊँ उद्बुध्यास्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ् सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

बृहस्पति– ऊँ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ्वसऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

शुक्र– ऊँ अन्नात्परिसुतो रसं ब्रह्मणा, व्यपिवत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ् शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु।

शनि–ऊँ शं नो देवीरभिष्ठय आपो भवन्तु प्रीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।।

राहु– ऊँ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ्या वृता।।

केतु– ऊँ केतुं कृण्वन्त्रकेतवे पेशो मर्या अपेशसे, समुषद्भिरजायथाः।।

पौराणिक मन्त्र[3]

[3] कर्मठगुरौ, अथ पुरोणक्तनवग्रहमन्त्रजपप्रयोगः, पृ0 सं0 82–83

सूर्य– ऊँ ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षण कारकः। विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु ते रविः।

चन्द्रमा– ऊँ रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्र सुधाशनः। विषमस्थानसम्भूतां पीडां हरतु ते विधुः।।

मंगल– ऊँ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः।।

बुध– ऊँ उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः। सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः।।

बृहस्पति– ऊँ देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः। अनेकशिष्य सम्पूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः।।

शुक्र– ऊँ दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः। प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु ते भृगुः।।

शनि– ऊँ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः। मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु ते शनिः।।

राहु– ऊँ महाशिराः महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु ते तमः।।

केतु– ऊँ अनेकरुपवर्णैश्च शतशोथ सहस्रशः। उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु ते शिखी।।

तान्त्रिक मन्त्र

सूर्य– ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। **चन्द्रमा–** ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।

मंगल– ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः। **बुध–** ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

बृहस्पति– ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः। **शुक्र–** ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

शनि– ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः। **राहु–** ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

केतु– ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

इन मन्त्रों के अतिरिक्त आगम–निगम ग्रन्थों एवं कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकों में ग्रहों से सम्बन्धित अनेक प्रकार के मन्त्र एवं कवच, हृदय, स्तोत्र आदि भी प्राप्त होते हैं, जिनका पाठ करने से ग्रह जनित पीड़ा का निवारण होता है।

प्रत्येक ग्रह के अधि व प्रत्यधिदेवताओं का वर्णन भी कर्मकाण्ड ग्रन्थों में प्राप्त होता है, अतः अरिष्टकारक ग्रह के अधि व प्रत्यधिदेवताओं के पूजनादि से भी अरिष्ट शमन होता है।[4]

2. दर्श (अमावस्या) जन्म शान्ति विधान[5]–

जैसा कि पूर्व अध्याय संख्या 02 में बताया गया है कि अमावस्या में जन्म होने पर बालारिष्ट होता है। पराशर मुनि का कथन है कि– अमावस्या में जन्म होने पर स्वयं व माता–पिता को

---

[4] मन्त्र साधना द्वारा चिकित्सा, पृ0 सं0 80 से 83

[5] बृहत्पराशर होराशास्त्र, दर्शशान्तिविचाराध्यायः, पृ0 सं0 887 से 889

वित्त, पुत्र, यश आदि की कमी होती है, अतः अमावस्या में जन्म होने पर विधिपूर्वक शान्ति विधान करना चाहिए।[6]

इसकी शान्ति के लिए विधिपूर्वक अग्निकोण में कलश स्थापन कर उस पर गूलर, वट, पीपल, पिलखन, आम व नीम के पत्ते एवं नीम की छाल तथा जड़ डालकर कलश को युग्म वस्त्रों से लपेटकर उसमें सभी तीर्थों, समुद्रों का आवाहन करें। आपोहिष्ठेत्यादि मन्त्रों से कलश पर जल छिडकें। तत्पश्चात् कलश के उपर सोना व चाँदी अथवा ताम्बा व चाँदी धातु की सूर्य–सोम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कर स्थापना करके षोड़षोपचार पूजन करें।

पूजन के पश्चात् ''आप्यायस्वेत्यादि'' मन्त्र से, ''सविता पश्चातातादि'' मन्त्र से सूर्य, ''सोमो धेनु सोमो अर्वन्तयामाशु इत्यादि'' मन्त्र से सोम का विधिपूर्वक शुद्ध चरु आदि सामग्री से हवन करें। इसके साथ ही ''त्र्यम्बक'' मन्त्र व व्याहृतियों से 108 या 28–28 आहुति प्रदान करें। हवन के पश्चात् शंकर जी का अभिषेक करके, घी से छायापात्र दान करायें।

तत्पश्चात जातक सहित माता–पिता का पूर्वस्थापित कलश के जल से अभिषेक करें, स्विष्टिकृत् होम व पूर्णाहुति करें। तदनन्तर यथाशक्ति ब्राह्मणों को भोजन करवाकर दक्षिणा में काली गाय, सोना, चाँदी तथा द्रव्य प्रदान करते हुए जातक की दीर्घायु हेतु आशीर्वाद प्राप्त करें, इस प्रकार विधिपूर्वक शान्ति–विधान सम्पन्न करने पर सभी अरिष्ट दूर होते हैं व कल्याण होता है।

3. **कृष्ण चतुर्दशी जन्म शान्ति विधान**[7]

यद्यपि यह पूर्व में ही प्रतिपादित किया जा चुका है कि कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को जन्म होने पर बालारिष्ट होता है। तथापि महर्षि पराशर जी का कथन है कि– कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के सम्पूर्ण मान को छः भागों में विभाजित करें। यदि जातक का जन्म प्रथम षष्ठांश में हुआ हो तो शुभ, द्वितीय षष्ठांश में पिता, तृतीय में माता, चतुर्थ में मामा, पंचम में वंश व षष्ठम में स्वयं या धन का नाश करता है। यदि दोषकारक भाग में जन्म हुआ हो तो दोषनिवारण के लिए विधिपूर्वक शान्ति विधान करना चाहिए।[8]

---

[6] बृहत्पराशर होराशास्त्र, दर्शशान्तिविचाराध्यायः, श्लोक सं0 1, पृ0 सं0 887

[7] बृहत्पराशर होराशास्त्र, कृष्णचतुर्दशीजन्माध्यायः, पृ0 सं0 889 से 892

[8] बृहत्पराशर होराशास्त्र, कृष्णचतुर्दशीजन्माध्यायः, श्लोक सं0 1 से 3 पृ0 सं0 889–890

पूज्य देवता[9]–

पूजा के लिए 1 कर्ष, आधा कर्ष या चौथाई कर्ष अर्थात् तीन माशा तोल की शिवजी की सोने की मूर्ति बनवायें। जो कि सिर पर बाल–चन्द्रमा, सफेद माला व श्वेत वस्त्र धारण किये, तीन नेत्रों वाली, बैल पर आसीन, वर और अभय मुद्रा धारण किये हुए हो।

पूजा विधान[10]–

वेदोक्त कलश स्थापन विधि से चारों दिशाओं में चार कलश एवं अग्नि कोण में अलग से पांचवां रुद्र कलश स्थापित करें।

अग्नि कोण के कलश से आरम्भ कर बारी–बारी से प्रदक्षिण क्रम से दक्षिणावृत चलते हुए वारुण मन्त्रों से सभी कलशों में देवताओं का आवाहन करें।

त्र्यम्बकं यजामहे इत्यादि मन्त्र से भक्तिभाव से शिव की पूजा करें, पुनः इमं मे वरुण तत्वयामि इत्यादि मन्त्रों से त्वन्नो अग्ने व सत्वन्नो अग्ने मन्त्रों से सभी कलशों में पूजा आवाहन करें।

आनो भद्द्राः अथवा भद्राअग्ने व पुरुष सूक्त का पाठ करने के पश्चात् कद्रुद्र इत्यादि सूक्त का पाठ करें। पश्चात् शिवजी का रुद्रसूक्त से अभिषेक व ग्रहों की यथा विधि पूजन करें। मन्त्र नीचे प्रस्तुत किये जा रहे हैं–

हवन की विधि[11]–

पीपल, प्लक्ष, पिलखन, ढाक, खैर, की समिधाओं में घी, चरु, तिल, काले उड़द, सरसौं से आहुतियां दे। उपरोक्त मन्त्रों की 108 या 28 आहुतियां सब मन्त्रों की देकर त्र्यम्बक मन्त्र व तीनों व्याहृतियों से तिलों का हवन करें। सब ग्रहों के लिए भी विहित ढंग से हवन करने पर कल्याण होता है । माता–पिता व जातक का अभिषेक ब्राह्मण भोजन छाया पात्र दान आदि सब यथा विधि करें। विधिपूर्वक शान्ति विधान को सम्पन्न कराने हेतु मन्त्रवेत्ता ब्राह्मण की सहायता लें।

4. भद्रादि–दुर्योग जन्म शान्ति विधान

शास्त्रकारों ने भद्रादि दुर्योगों (भद्रा, तिथिक्षय, कुलिक, मृत्यु, शूल, परिघ, व्याघात, गण्ड, वज्र, यमघण्ट, दग्धादि योगों) में जन्म होने पर अरिष्ट कारक बताया है। महर्षि पराशर ने इन योगों की शान्ति के विधान को विस्तार से प्रतिपादित किया है, जो कि निम्न प्रकार से है–

पूजन–हवन–दान विधि[12]

भद्रा, तिथि क्षय व अन्य दुर्योगों में जन्म होने पर उसकी शान्ति के लिए गाय के घी से शिवालय में दीपदान करें। शंकर जी का अभिषेक, पीपल के वृक्ष की पूजा के बाद 108 प्रदक्षिणाएं

---

[9] बृहत्पराशर होराशास्त्र, कृष्णचतुर्दशीजन्माध्यायः, श्लोक सं0 4/5 पृ0 सं0 890

[10] बृहत्पराशर होराशास्त्र, कृष्णचतुर्दशीजन्माध्यायः, श्लोक सं0 6 से 9 पृ0 सं0 890

[11] बृहत्पराशर होराशास्त्र, कृष्णचतुर्दशीजन्माध्यायः, श्लोक सं0 10 से 13 पृ0 सं0 891/892

[12] बृहत्पराशर होराशास्त्र, भद्रादिदुर्योगजन्मशान्त्याध्यायः, श्लोक सं0 4 से 7, पृ0 सं0 893

पुनः गणपति सूक्त, पुरुषसूक्त, सूर्य सूक्त, मृत्युंजय मन्त्र का यथाशक्ति जप करके शान्ति पाठ करें। इस प्रकार से शान्ति विधान करने से मृत्यु का निवारण होता है।

विष्णु भगवान के मन्त्र से 108आहुतियां दे यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करायें यदि उक्त दुर्योगो के साथ गण्ड नक्षत्र, लग्न गण्ड, तिथि गण्ड या मूल आश्लेषा नक्षत्र भी पड़े तो विशेष शान्ति करानी चाहिये। अर्थात् मूल शान्ति के साथ ही यह शान्ति विधान भी करें।

5. संक्रान्ति जन्म शान्ति विधान

बालक के जन्म समय व्यतीपात वैधृति संक्रान्ति हो तो परम अशुभ संक्रान्ति से ठीक संक्रान्ति समय से 16 घडी (6 घंटे 24 मिनट) पहले व इतनी ही घडियां बाद तक समझे संक्रान्ति शान्ति मे नवग्रहों का यज्ञ करके शान्ति विधान करें। तब कुछ भी दोष नही होता अन्यथा दारिद्रय की अधिकता होती है रविवारादि क्रम से जिस वार को संक्रान्ति हो तब उस संक्रान्ति के नाम क्रमशः ''घोरा, ध्वांक्षी, महोदरी, मन्दा, मन्दाकिनी, मिश्रा, राक्षसी'' होते है।

इनमें भयंकर नाम वाली संक्रान्ति विशेष दोष दायिनी हैं, सन्क्रान्ति समय में उत्पन्न जातक दुख व दरिद्रता का भागी होता है। सर्वत्र अलक्ष्मी व अश्री को प्राप्त करके मृत्यु जैसे परम अनिष्ट का भागी भी हो सकता है।

जप, पूजन, हवन, दानादि का विधान[13]–

घर में पूर्व दिशा में गोबर से लीपकर सुसज्जित मण्डप में पांच द्रोण तोल से धान ढाई किलो द्रोण तिल से तीन ढेर बनायें, इन पर पृथक तीन अष्टदल कमल बनायें। पुण्याहवाचन करके आचार्य का वरण करें। आचार्य धर्मज्ञ मन्त्रशास्त्री व शान्ति कार्य का विशेषज्ञ होना चाहिये, आचार्य को वरण में पांच वस्त्र या पांच भूषण रेश्मी व अगूंठी अवश्य दें। पूर्वोक्त तीन कलशों के अतिरिक्त चौथा वारुण कलश अलग से ईशान कोण में स्थापित करें।

पूर्वोक्त तीनों धान्य राशियों पर बिना छेद के सुन्दर कलश स्थापित करें। उनमें तीर्थजल, मृतिका, औषधियों, पंच रत्न, पंचगव्य, पल्लव आदि लगाकर जोडा वस्त्रों से लपटें। कलशों के उपर बारीक वस्त्र से लपेटकर एक–एक पात्र भी रखें। उन पात्रों में वक्ष्यमाण देवताओं की मूर्तियां स्थापित करें।

सूर्य को अधिदेव के रूप में व चन्द्रमा की मूर्ति प्रत्यधिदेव के रूप में स्थापित करें।

तीन स्थापित कलशों में अगल–बगल के दो कलशों पर सूर्य व चन्द्रमा की मूर्ति रखकर पूजें तथा मध्य कलश में संक्रान्ति का पूजन करें। पूजन के उपरान्त उन्हें यथाशक्ति 2–2 वस्त्र भेंट करें या रक्त सूत्र कलावे से ही वस्त्र युग्मों को अर्पण करें। सभी शान्तिकार्यों में सामर्थ्य होने पर लोभ करना अनुचित है तथा कार्य साधन की हानि होती है।

सूर्य, चन्द्रमा के मन्त्रों से व्याहृति पूर्वक अर्थात् तीनों व्याहृतियों से युक्त अपने मन्त्रों से पूजा करें।

---

[13] बृहत्पराशर होराशास्त्र, संक्रान्तिजन्मशान्त्याध्यायः, श्लोक सं0 5 से 24, पृ0 सं0 894 से 897

प्रधान प्रतिमा की पूजा त्र्यम्बकं यजामहे इत्यादि मन्त्र से करें। सूर्य की पूजा के लिए उत्सूर्य इत्यादि मन्त्र का प्रयोग करें। चन्द्रमा की पूजा में पूर्वोक्त आप्यायस्व इत्यादि मन्त्र का प्रयोग करें।

सब पूजा षोडशोपचार या पंचोपचार से करें। नैवेद्य गुड युक्त समर्पित करें। तत्पश्चात् प्रधानदेव की पूजा हेतु उसकी प्रतिमा को स्पर्श करते हुए त्र्यम्बकं यजामहे मन्त्र का 1008 या 108 या 28 बार जप करें।

पश्चात् आनोभद्राः क्रतवो इत्यादि भद्र सूक्त एवं भद्रा अग्ने इत्यादि, पुरुष सूक्त, त्र्यम्बक मन्त्र का जप करें। अथवा चार ब्राह्मण चारों दिशाओं में बैठकर कलशों का स्पर्श करते हुए बारी–बारी से या समवेत रूप से कर ले।

कलशों से पश्चिम में स्थण्डिल (रेत की वेदी) पर अग्नि प्रज्वलित करें। पूजित देवताओं कें मन्त्रों से 108 या 28 घी की आहुतियां दें। मृत्युजंय मन्त्र के हवन मे तिल की आहुतियां दें।

इसके पश्चात् समुद्रज्येष्ठासूक्त, आपोहिष्ठेत्यादि तीन ऋचाओं, अक्षिभ्यामिति सूक्त, पवमान सूक्त, त्र्यम्बक मन्त्र, उत्सूर्येत्यादि मन्त्र, आप्यायस्वेत्यादि मन्त्र एवं सुरास्त्वामभिसिचतु इत्यादि पौराणिक मन्त्रों से जातक सहित सपत्नीक यजमान का अभिषेक करें।

घी से छायापात्र दान के साथ गोदान, वस्त्रदान, स्वर्णदान एवं 100 ब्राह्मणों को भोजन करवाना चाहिए। इस प्रकार से शान्ति विधान करने पर संक्रान्ति, वैधृति, व्यतीपात आदि दोषों की शान्ति एवं समस्त अरिष्टों का नाश हो जाता है।

6. एक नक्षत्र जन्म शान्ति विधान

यदि पिता व पुत्र पुत्री या माता व संतान अथवा दो भाइयों या भाई बहिनों का एक नक्षत्र में ही जन्म हो तो उनमें से एक को मृत्यु तुल्य कष्ट या मृत्यु होती है। शुभ दिन शुभ नक्षत्र चन्द्र बल व तारा बल देखकर रिक्ता तिथि के अतिरिक्त तिथियों में भद्रा करण के अतिरिक्त समय में शान्ति विधान करना चाहिये।[14]

ईशान कोण में कलश स्थापन करके उस पर नक्षत्र देवता की प्रतिमा सोने व चांदी से निर्मित कर रखें। नक्षत्र के देवता के मंत्र से वहां पर पूजा करें। तब लाल कपडे से मूर्ति को लपेटकर सम्पूर्ण कलश कों दो वस्त्रों में लपेट लें। पश्चात् वैदिक विधि से अग्नि प्रज्वलित करके नक्षत्र मंत्र से 108 आहुतियां दे । समिधा अन्य चरू आदि से हवन करें। पश्चात् प्रायश्चित आहुति स्विष्टकृत आहुति दे। तब आचार्य एक नक्षत्र जात दोनों का अभिषेक करें।[15]

[14] बृहत्पराशर होराशास्त्र, एकनक्षत्रजन्मशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 1 से 2.5, पृ0 सं0 898 से 899
[15] बृहत्पराशर होराशास्त्र, एकनक्षत्रजन्मशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 2.5 से 6, पृ0 सं0 899

ऋत्विकों को दक्षिणा दें आचार्य को विशेष दक्षिणा दे लोभ न करते हुए ब्राह्मण को भोजन करायें । देवता नक्षत्र देवता की प्रतिमा का दान करे अनाज व वस्त्र का दान करें। साथ ही सामर्थ्य होने पर वाहन विस्तर कुर्सी आदि का भी दान करे। नक्षत्र के देवता का वैदिक मन्त्र ही नक्षत्र मंत्र कहलाता है।[16]

7. ग्रहणजन्म शान्ति विधान

सूर्य व चन्द्रग्रहण के समय जिनका जन्म हो उन्हें ब्याधि, कष्ट दरिद्रता और मृत्यु भय होता है। ग्रहण जन्म शान्ति विधान इस प्रकार से है– सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो सूर्य की सोने व चन्द्र ग्रहण होतो चन्द्रमा की चांदी की मूर्ति बनायें। साथ ही राहु की मूर्ति शीशे कांस आदि से बनायें।[17]

पवित्र स्थान गोबर से लीपकर वहां पर सुन्दर कपडा बिछायें कपडे पर तीनो पूर्वोक्त मूर्तियां रखें। सूर्य पर रोली से रंगे लाल चावल लाल चन्दन आदि गन्ध लाल फूल व सूर्य की प्रसन्नतार्थ गेहूं गुड लाल कपडा तांबा आदि भी रखे । चन्द्रमा पर सफेद अक्षत सफेद फूल सफेद चन्दन आदि व चन्द्रमा की दान की वस्तुएं चावल बूरा सफेद वस्त्र मोती आदि रखे। राहु की पूजा काले फूल व काले वस्त्र से करें यहां काला व नीला दोनों ग्रहण है। नक्षत्र पति को सफेद चावल गन्ध इत्यादि चढायें। गन्ध में मूल रूप से चन्दन का ग्रहण हैं उसके अभाव में गंगा रज या गोपी चन्दन आदि चढा सकते है।[18]

सूर्य पूजा में आकृष्णेन रजसा आदि मंत्र चन्द्र के लिए इमं देवा आदि मंत्र राहु के समय दूर्वा चढाते समय कया नशिचित्रा आदि मंत्र पढे ये मन्त्र प्रसिद्ध है। नक्षत्र स्वामी के पूर्वोक्त मंत्र से नक्षत्रेश की पूजा करें ।[19]

हवन में सूर्य के आंक चन्द्रमा के लिए ढाक राहु के लिए दूर्वा से हवन करें। नक्षत्र के लिए पीपल या बड बह्म वृक्ष की समिधा लें। घी सामाग्री व तिलों से हवन करके कलश जल से यजमान व बालक का अभिषेक करें ।[20]

---

[16] बृहत्पराशर होराशास्त्र, एकनक्षत्रजन्मशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 7/8, पृ0 सं0 899
[17] बृहत्पराशर होराशास्त्र, ग्रहणजन्मशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 1 से 4, पृ0 सं0 902
[18] बृहत्पराशर होराशास्त्र, ग्रहणजन्मशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 5 से 8.5, पृ0 सं0 902
[19] बृहत्पराशर होराशास्त्र, ग्रहणजन्मशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 9 से 10.5, पृ0 सं0 903
[20] बृहत्पराशर होराशास्त्र, ग्रहणजन्मशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 11 से 13, पृ0 सं0 903

आचार्य का सत्कार पूजनादि करके अपनी सामर्थ्यानुसार ब्राह्मणों को भोजन करायें। ब्राह्मणों को प्रणाम करके क्षमा याचना करें इस विधि से शान्ति करने पर मनुष्य के सब अरिष्ट दूर होते है और सौभाग्य बढता है।[21]

8. गण्डशान्ति–विधान

तिथि, नक्षत्र व लग्न के भेद से तीन प्रकार का गण्डान्त होता है। इन गण्डान्तों में जन्म यात्रा व विवाह होना परम अनिष्ट कारक होता है।[22]

तिथि या लग्न गण्डान्त में जन्म होने पर अभुक्त मूल की अवधि के अतिरिक्त सूतक निबट जाने पर शुभ दिन में पिता गण्डान्त शान्ति करे। शान्ति से पहले पिता पुत्र का मुख न देखें। तिथि गण्ड में बैल का दान नक्षत्र मे गोदान लग्न गण्डान्त में सोने का दान करने से दोष निवारण होता है। गण्डान्त के पूर्व भाग में जन्म हो तो पिता व पुत्र का इकटठे अभिषेक करें। द्वितीय भाग में जन्म हो तो माता व पुत्र का अभिषेक करें। नक्षत्र के आकार की प्रतिमा बनाकर दो वस्त्र समर्पित करके पूजन करें। मूलादि नक्षत्र शान्ति में जिस का प्रसंग हो उसके साथ गण्डान्त शान्ति भी आवश्यक होती है। गण्डान्त के पूर्वापर भाग भेद से पिता पुत्र या माता पुत्र का अभिषेक करते समय इनकी प्रधानता रहेगी। गौण अभिषेक माता व पिता का भी क्रमशः होगा, ज्योतिर्निबन्ध में तीनो का अभिषेक कहा गया है।[23]

नक्षत्र मूर्ति के लिए सोलह मासे, आठ मासे, सामर्थ्यनुसार कम या अधिक तोल की मूर्ति बनायें। तिथि गण्ड में तिथि स्वामी की व लग्न गण्ड में राशि स्वामी की मूर्ति रखें। तब स्वस्तिवाचनादि कार्य यथा विधि करके षोडष उपचारों से पूजन हवन आदि सब कार्य होगा। समिधा ,अन्न जौ तिल या खील व घी का हवन पूर्णाहुति होम होगा। विद्वान ब्राह्मण को तिल पात्र आदि दान कर ब्राह्मण भोजन करायें, इस प्रकार करने से दोष का निवारण होता है तथा आरोग्य व ऐश्वर्य बढते है।[24]

नक्षत्र गण्डान्त में सोलह, आठ या चार पल कांसे के बर्तन में खीर रखें। शंख व मक्खन भी रखें। चांदी की चन्द्र प्रतिमा बनाकर विधि पूर्वक पूजन करें। यह विधि मूल शान्ति के अतिरिक्त

---

[21] बृहत्पराशर होराशास्त्र, ग्रहणजन्मशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 14 से 16, पृ0 सं0 903/904

[22] बृहत्पराशर होराशास्त्र, गण्डान्तशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 1 से 5, पृ0 सं0 904

[23] बृहत्पराशर होराशास्त्र, गण्डान्तशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 6 से 10, पृ0 सं0 904

[24] बृहत्पराशर होराशास्त्र, गण्डान्तशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 11 से 14, पृ0 सं0 906

होगी। चन्द्रमा के मन्त्र का 1000 बार जप करें, आप्यायस्व इत्यादि मंत्र से पूजन करें। ऐसा करने से दोष शान्ति होकर सब प्रकार से कल्याण होता है। जिस प्रकार पानी में रहकर भी कमल का पता गिला नही होता उसी प्रकार दोष काल में जन्म होने पर भी शान्ति करने से मनुष्य दोष का भागी नही होता।[25]

9. मूलशान्ति विधान[26]

मूल के प्रथम चरण मे पिता, दूसरे चरण मे माता, तीसरे चरण में धन धान्य का नाश होता है चौथे चरण में धन लाभ लेकिन मतान्तर से मित्रों का नाश होता है । पिता का अनिष्ट एक वर्ष के भीतर माता का अनिष्ट तीन वर्ष के भीतर धन नाश दो वर्ष के भीतर तथा एक वर्ष के भीतर स्वयं को हानि होती है। इसलिये चारों चरणों मे ही विधि पूर्वक शान्ति करनी चाहिये।

दोष प्रतीत न होने पर भी मूलादि नक्षत्रों की शान्ति सें हानि न होकर लाभ ही होता है। इसलिये चौथे चरण में भी शान्ति करनी चाहिये। जन्म से बारहवें दिन या 27 वें दिन उसी नक्षत्र में या किसी भी शुभ दिन में जन्म से आठ वर्षों के भीतर विधान पूर्वक शान्ति कार्य करना आवश्यक है।

शान्ति विधान इस प्रकार से है– समतल भूमि पर शुभ स्थान में गोबर से लीपकर मण्डल बनायें। घर से पूर्व या उत्तर दिशा में मण्डल बनायें। मण्डप का नाप पिता के हाथ से आठ या चार हाथ वर्गाकार बनाये। चारों तरफ द्वार केले के खम्भे तोरण आदि बनायें। मण्डप के बाहर हवन कुण्ड या स्थण्डिल बनायें। कुण्ड निर्माण में यज्ञीय शास्त्र की विधि का पालन करें। चारों दिशाओं में चार कलश पांचवा रूद्र कलश ईशान कोण में व एक और कलश 100 छेदों वाला रखें कलश स्थापन की विधि से पांचों कलश स्थापित करे।

पूर्वोक्त प्रकार से 16 मासे या 8 या 4 मासे की अथवा सामर्थ्यानुसार नक्षत्र देवता की मूर्ति बनायें। मूल नक्षत्र के अधिपति राक्षस नैर्ऋत्य की मूर्ति दो सिर वाली काला रंग भेडिये जैसे मुख तलवार की धार हाथ में दिखने में भयानक व राक्षस की सवारी वाली बनाये, अथवा मूर्ति का मूल्य रखकर पूजा करें। सोने में सब देवताओं का निवास है गण्ड नक्षत्रों में उसी नक्षत्र के देवता की मूर्ति का निर्माण होगा।

---

[25] बृहत्पराशर होराशास्त्र, गण्डान्तशान्त्याध्याय, श्लोक सं0 15 से 18, पृ0 सं0 906

[26] बृहत्पराशर होराशास्त्र, मूलशान्त्याध्याय, पृ0 सं0 907 से 911

इसके बाद स्वस्तिवाचन, आचार्य वरण, कलश स्थापना करें कलशों में तीर्थों का जल, पंचगव्य, सर्वोषधी, अदरक, तुलसी, सतावर, आंवला, 100 छेद वाले घडे में रखे। पश्चिम दिशा में एक बांस की टोकरी रखें सफेद वस्त्र अक्षत आदि से नैर्ऋत्य देव की पूजा करें।

अधिदेव के रूप में इन्द्र की और प्रत्यधिदेव के रूप में जल की पूजा करें अपनी परम्परा अनुसार सभी देवों का पूजन करें पश्चात् प्रधान देव व महादेव के प्रीत्यर्थ हवन करें हवन में 108 या 1008 आहुतियां दें मृत्यु निवारण हेतु त्र्यम्बक मंत्र का जप व हवन भी करें।

नैर्ऋत्य के लिए हविष्य हवन सामग्री की आहुति नैर्ऋत्य कोण में अग्नि में दें। मोषुणः परापर इत्यादि या यत्तदेवेति मन्त्र से पूजा व हवन करें। नैर्ऋत्य के लिए घी व खीर की 108 आहुति दें। अधिदेव या प्रत्यधिदेवों की आहुतियां उन्हीं के मंत्रों से दे।

पश्चात् जातवेदसे सुनवाम मंत्र या गायत्री मंत्र, त्र्यम्बक मंत्र, सीरायुजन्ते कामाग्नि वर्णा मंत्र, वास्तोष्पते मंत्र, क्षेत्रस्य पतिनां गृणाना मंत्र, अग्निं दूतं पुरोदधे मंत्र व श्रीसूक्त से घी व चरू की आहुतियां दे बाद में या ते रूद्र शिवा से सूर्वा भरकर घी की आहुति दें, बाद में महाव्याह्वतियों का व स्वस्टिकृत हवन करें ।

बाद में उत्तम आसन पर लकडी की पटरी चौकी आदि पर बैठकर पिता माता व पुत्र का मंत्रवेता आचार्य प्रसन्ता पूर्वक अभिषेक करें। बाद में कपडे से घडे को लपेटकर शत छिद्र कलश में शतोषधी जल डालकर यजमान को स्नान कराएं । स्नान कराते समय अक्षीभ्यामित्यादि सूक्त व पावमानी ऋचाओं का पाठ करें।

आचार्य को दुधारू गाय का दान करें, अन्य ब्राहमणों को दक्षिणा व भोजन कराएं। ''**यत्पापं यच्च में दौःस्थ्यं सर्वगात्रेष्वस्थितम्। तत्सर्वं भक्षयाज्यत्वं लक्ष्मीपुष्टिं विवर्धय।।**''—इस श्लोक को बोलते हुए छाया पात्र का दान करें।

पश्चात शान्ति पाठ या शान्ति अध्याय का पाठ करके ब्राहमण से आशिर्वाद लें। इस तरह शान्ति विधान करने से मूल दोष का नाश हो जाता है।

10. ज्येष्ठादि गण्डान्त शान्ति विधान[27]

ज्येष्ठा गण्ड या गण्डान्त में उत्पन्न होने पर माता पिता व स्वयं का नाश होता है, अतः सब दोषों के निवारणार्थ शान्ति विधान इस प्रकार से है।

सभी गण्ड नक्षत्रों में मूल शान्ति की तरह मण्डप आदि बनाकर ज्येष्ठा में इन्द्र प्रधान देवता व अग्नि अधि देवता, राक्षस का प्रत्यधि देवता के रुप में पूजन करें। इस प्रकार तीनो देवों का मूर्ति निर्माण करके पूजन करना चाहिए।

इन्द्र का स्वरूप बज्र का अंकुश धारण किए हुए ऐरावत पर सवार सुन्दर रूप में सार्मथ्य अनुसार सुवर्ण से मूर्ति बनाएं। इन्द्रायेन्दोमरूत्वते मन्त्र से गन्धाक्षत पुष्पादि व भोज्य पदार्थों से लोकपाल समेत इन्द्रादि की पूजा करें।

वारूण मन्त्रों से सर्वत्र कलश पूजन करें। पहले त्वं नो अग्ने पुनः सत्वं नो अग्ने मंत्र पुनः समुद्र ज्येष्ठा पुनः इयंमे गंगे मन्त्रों का पाठ कर कलशों की प्रतिष्ठा करें। दो दो वस्त्र चढाएं। बाद में इन्द्र सूक्त रूद्रीय पाठ मृत्युंज्य मंत्र का पाठ व संकल्प पूर्वक हवन करें। पश्चात पूर्वोक्त मंत्रों व वारूण मंत्रों से अभिषेक करना चाहिए।

अभिषेक के बाद यजमान सफेद वस्त्र पहनकर घृत दान करें। पुनः देवताओं का उत्तर पूजन करें। रूपं रूपं इति मंत्र, चित्रं देवानां मंत्र, तचर्क्षुदेवहितां मंत्रों का उच्चारण करें। देवता को विशेषार्घ्य समर्पण के समय यह श्लोक पढें– **''नमस्ते सुरनाथाय नमस्तुभ्यं शचीपते। गृहाणर्घ्यं मया दत्तं गण्डदोषोपशान्तये।। दानेनानेन देवेश गण्डदोषविनाशय।''** पश्चात सामर्थ्य अनुसार दान कार्य तथा ब्राहमण भोजन कराने से आयु की वृद्धि व गण्ड दोष का नाश होता है।

अन्य श्लेषा मघा अश्विनी रेवती आदि में भी मूल शान्ति की तरह कुम्भ स्थापन करके सम्बन्धित स्वामी की प्रतिमा नक्षत्र से ही पूजन करके हवन अभिषेक दान भोजन ब्राहमण भोजन आदि विधि तत नक्षत्र पति का नामोंल्लेख करते हुए मूल नक्षत्र की ही तरह करें।

ज्येष्ठा नक्षत्रोत्पन्न कन्या ज्येठ (पति का बड़ा भाई) को, विशाखा के चतुर्थ चरण मे देवर को नष्ट करती है। आश्लेषा के 2, 3, 4 चरणों में व मूल के 1, 2, 3 चरणों में उत्पन्न लड़का या लड़की कम्रशः सास व ससुर को नष्ट करते हैं अतः इनके विवाह के समय भी कल्याण चाहने

---

[27] बृहत्पराशर होराशास्त्र, ज्येष्ठादिगण्डशान्त्याध्याय, पृ0 सं0 911 से 914

वाले व्यक्ति को इनकी शान्ति करानी चाहिए शान्ति का विस्तार आर्थिक स्थिति के अनुसार निश्चय करें यदि देवर जेठ सास ससुर न हो तो विवाह के समय शान्ति आवश्यक नहीं है।

यदि सामर्थ्य न हो तो केवल गोदान ही करें गोदान समस्त भूमंडल के सभी दानों से भी बढ़कर है । मूल–ज्येठा–आश्लेषा व मघा के दोष निवारणार्थ तीन गोदान, रेवती–अश्विनी के दोशषमनार्थ दो गाय अन्य गण्ड नक्षत्रों एवं दुर्योगों में केवल एक गाय का ही दान करें गो न होने पर गाय का मूल्य या श्रद्धया न्यूनाधिक प्रदान किया जा सकता है।

11. त्रिखलजन्म शान्ति विधान[28]–

तीन पुत्रों के बाद पुत्री का या तीन पुत्रियों के बाद पुत्र का जन्म हो तो त्रिखल जन्म या त्रीतर जन्म कहलाता है । ऐसी स्थिति में पिता व माता के कुल में अरिष्ट का भय होता है अतः ऐसा योग होने पर कंजूसी न करते हुए शान्ति विधान करना चाहिए ।

शान्ति हेतु सूतक निवृत्ति के बाद शुभ समय व दिन चन्द्र तारा बलयुक्त में आचार्य व अन्य पण्डितों का वरण करके ग्रह यज्ञ करते हुए शान्ति करें।

चारों दिशाओं में चार कलशों पर पूर्व में ब्रह्मा, दक्षिण में विष्णु, उत्तर में महेश, व पश्चिम में इन्द्र की सोने की प्रतिमा स्थापित करके पूजा करें।

कलश स्थापन विधि से अनाज के ढेर पर कलश स्थापित करें। गणेश, नवग्रह क्षेत्रपाल, योगिनी, आदि का पूजन व सूर्य भगवान की विशेष पूजा सर्वत्र विहित है। तत्पश्चात् चार रूद्र सूक्त व शान्तिमन्त्रों का पाठ करें।

आचार्य तत्तत् देवों का हवन करता है तथा प्रत्येक कलष पर प्रधान देव की स्थापना करते हुए, एक एक ब्राह्मण उस देवता का जप करता रहे।

आचार्य घी, तिल, व चरू का हवन करें, आहुतियों की संख्या 1008 या 108 या 28 यथावसर रखें ।

ब्रह्मा आदि सब देवताओं के मन्त्र अपने अपने वेदानुसार ग्रहण कर उन मन्त्रों से हवन करने पश्चात् स्विष्टकृत आहुति, बलिदान (दिक्पाल, क्षेत्रपाल बलि) एवं पूर्णाहुति दें।

तत्पश्चात् सपरिवार शिशु का अभिषेक कर ब्राह्मणों व आचार्यों को दक्षिणा दें। पश्चात् कांसे के घी से छाया–पात्र दान कर बाद में दीनों अनाथों को भी अन्नादि (तीन अन्न, तीन प्रकार के वस्त्र तीन धातु) का यथाशक्ति दान करें। इस प्रकार शान्ति करने से सब प्रका के अरिष्ट दूर हो जाते हैं ।

12. प्रसव विकारादि शान्ति विधान[29]

प्रसव विकार अर्थात विकृत प्रसव होने पर उस कुल व ग्राम का अरिष्ट होता है।

---

[28] बृहत्पराशर होराशास्त्र, त्रिखलजन्मशान्त्याध्याय, पृ0 सं0 915 से 916

[29] बृहत्पराशर होराशास्त्र, प्रसवविकारशान्त्याध्याय, पृ0 सं0 916 से 919

समय से पूर्व या बाद में, कम अंग वाला या अधिक अंग वाला, सिर विहीन, दो सिर वाला, स्त्री में पशु जैसी आकृति वाला या पशु में मानव सदृश आकृति वाला प्रसव हो तो प्रसव विकार होता है इससे विनाश की सूचना मिलती है।

घोड़ी, हथिनी या गाय भैंस जुड़वाँ बच्चों को जन्म दें या विजातीय प्रसव हो तो प्रसव विकार होता है। ऐसा होने पर 6 मास के भीतर राजा या स्वामी का क्षय होता है।

जिस घर में स्त्री या पशु को विकृत प्रसव हो उस कुल में महत् अनिष्ट होता है। उस दोष की शान्ति के लिए विधान भक्तिभाव से करें । यदि नास्तिक बुद्धि से या लोभ से शान्ति नहीं की जाए तो महान् संकट उपस्थित होता है ।

गाय, भैंस का विकृत प्रसव हो तो उस गाय भैंस आदि पशु को परदेश में छोड़ देना चाहिए या किसी गरीब व्यक्ति को दान कर देना चाहिए ।

स्त्री को प्रसव विकार हो तो दिनभर व्रत रखकर (रात–दिन) अगले दिन रूद्रसूक्त व शान्ति सूक्त का पाठ करवाएँ, बाद में प्राजापत्य विधि से हवन करें । ब्रह्मा, विष्णु, महेश व ग्रहों का पूजन करें तथा हवन त्रिखल शान्ति विधान में बताई गई विधि से करें।

ब्रह्मणों या याचकों को दानादि से सन्तुष्ट करने के पश्चात् मनुष्य सब प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है ।

सिंहर्क गत सूर्य में (सौर भाद्रपद) यदि गाय को प्रसव हो तो 6 मास के भीतर स्वामी का अनिष्ट होता है ।

माघ मास (सौर) व बुधवार को भैंस का प्रसव तथा श्रावण में दिन में घोड़ी को प्रसव हो तो भी यह प्रसव विकार कहलाता है। एतदर्थ दोष निवारणार्थ शान्ति विधान करना चाहिए, अथवा उन पशुओं तो त्याग देना चाहिए।

गाय आदि पशुओं का दान या त्याग करना युक्त है तथा शान्ति मध्यम मार्ग है।

ऐसा होने पर घी व सरसों का हवन व्याहृतियों द्वारा करना चाहिए। 10000 आहुतियाँ हवन में दें तथा व्रत रखकर यथाशक्ति ब्राह्मण को दक्षिणा दें, तब शान्ति होती है।

तुला राशि में परम नीचांश (6.10 अंश) पर सूर्य हो तो हजार राजयोगों को नष्ट करने वाला मानव प्रसव होता है ।

शनि से दुगुना मंगल, मंगल से दुगुना बुध, बुध से आठ गुना गुरू, गुरू से आठ गुना शुक्र, शुक्र से 16 गुना चन्द्रमा व चन्द्र से 32 गुना सूर्य बलवान् होता है। अतः परम नीच गत सूर्य या चन्द्र होने पर जातक भाग्य सुख, धन व स्वास्थ्य से रहित होता है।

नीच राशि होने पर भी अनिष्ट होता ही है, अतः कल्याणेच्छुक व्यक्ति कार्तिक प्रसव व नीचगत चन्द्रमा की शान्ति करें, तब मनुष्य जातक सब प्रकार चिरंजीवी होता है।

ऐसी स्थिति में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र व ग्रहों का पूजन, चार कलशस्थापन त्र्यम्बक मन्त्र का जप व होम करना चाहिए। शान्ति विधि त्रिखल–शान्ति की तरह करें।

दान, होम, विप्रभोजन, सुवर्ण या रजत या ताम्र की सूर्य मूर्ति का दान तुलार्क में करें तथा वृश्चिक चन्द्र में शिवार्चन व सोमदान करें। जपादि करवाने से अधिक सुख मिलता है ।

13. अन्य अरिष्ट शान्ति विधान

अरिष्ट शमनार्थ दुर्गासप्तशती का अनुष्ठान सामर्थ्यानुसार दस, शत, सहस्र अथवा लक्ष चण्डी के रूप में किया जा सकता है, क्योंकि दुर्गासप्तशती में लिखा है कि–''शान्ति कर्म, ग्रहपीड़ा निवारण, अरिष्टों के शमन, बालग्रहों के दोष निवारणार्थ दुर्गा महात्म्य अर्थात् दुर्गासप्तशती के विधान को सम्पादित करना चाहिए।''[30]

महामृत्युंजय उपासना का विधान भी शास्त्रों में वर्णित किया गया है। जिसके विधिवत् पुरश्चरण से मृत्यु पर विजय प्राप्त होती है एवं अरिष्टों का नाश होता है। इस सन्दर्भ में शिवपुराण में वर्णन प्राप्त होता है कि– भगवान त्र्यम्बक सभी लोकों के देवों में सर्वश्रेष्ठ हैं, व पुष्टिकारक, अमृतमय, मुक्तिपाश से मुक्ति दिलाने वाले व बन्धन से मुक्ति प्रदायक हैं। तथा महर्षि दधिचि ने मृतसंजीवनी विद्या की उपासना से शरीर को वज्र की भांति बना दिया था।[31] महामृत्युंजय मन्त्रों के प्रकार, जप–होमादि विधान जातक सारावली में विस्तार से प्रदान किया गया है।[32]

14. आयुर्वेद ग्रन्थोक्त चिकित्सा एवं शान्ति विधान

सुश्रुत संहिता में उन सभी बालग्रहों एवं उन से होने वाले रोगों के लक्षणों का वर्णन प्रदान किया गया है जिन से शिशुओं को अरिष्ट होता है।[33] साथ ही विस्तार से इनकी चिकित्सा का भी विवरण प्रदान किया गया है। जिनमें औषधियों से परिषेचन, औषधियों से सिद्ध किये हुए घृत का पान, औषधियों से अभ्यंगन, धूपन, माला धारण एवं सम्बन्धित बालग्रह के लिए बलि–प्रदान की विधियों को विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है।[34] उन आयुर्वेद ग्रन्थोंक्त उपायों को करने से निश्चय ही शिशु के अरिष्टों का शमन कर उसके प्राणों की रक्षा की जा सकती है।

---

[30] दुर्गासप्तशती, द्वादशोध्याय, श्लोक सं0 16 से 18 तक, पृ0 स0 253–254

[31] शिवपुराण, रुद्रसंहिता, सतीखण्ड, अध्याय 68, श्लोक सं0 22 से 31

[32] जातक सारावली–अष्टम भाव, नवम अध्याय, पृ0 सं0 305 से 338

[33] सुश्रुत संहिता, उत्तर तन्त्र, कल्पस्थान, अध्याय सं0 27, पृ0सं0 660 से 662

[34] सुश्रुत संहिता, उत्तर तन्त्र, कल्पस्थान, अध्याय सं0 28 से 36, पृ0सं0 663 से 668